

## शान्ति-पाठ (भाषा)

(चौपाई)

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी ।  
लखन एक सौ आठ विराजें, निरखत नयन कमलदल लाजें ॥  
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थकर सुखकारी ।  
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक ॥  
दिव्य विटप बहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ।  
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥  
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई ।  
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को ॥

(वसन्ततिलका)

पूजें जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके ।  
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ॥  
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप ।  
मेरे लिए करहिं शान्ति सदा अनूप ॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को ।  
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे ॥

(स्रग्धरा)

होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा ।  
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहै, व्याधियों का अदेशा ॥  
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी ।  
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी ॥

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।  
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥

(मंदाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का ।  
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूं सभी का ॥  
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ ।  
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ ॥

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।  
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥  
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।  
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।  
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।  
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(क्षमापना)

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।  
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पून होय॥१॥  
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।  
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥  
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।  
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥  
तुम चरणन ढिंंग आयके, मैं पूजूँ अति चाव।  
आवागमन रहित करो, मेटो सकल विभाव॥४॥

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया।  
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया॥८॥  
पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।  
इन्द्र-नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।  
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया॥१॥  
जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।  
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत-तप आदि स्वाहा।  
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया॥२॥  
अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।  
पर लक्ष्यी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा।  
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया॥३॥  
तुम हो पूज्य पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा।  
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा।  
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया॥४॥